DR.MALA KUMARI

ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)

DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY

A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR

B.A –PART 1 PSYCHOLOGY (HONS)

LECTURE - 1

अभिप्रेरण का अर्थ एवं स्वरुप

(MEANING AND NATURE OF MOTIVATION)

अभिप्रेरण अंग्रेज़ी भाषा के motivation का हिन्दी अर्थ है| 'मोटिवेशन" शब्द की उत्पति लैटिन भाषा के 'motom"शब्द में हुई है move, motor तथा motion अर्थात 'गति करना|" मनोविज्ञान में अभिप्रेरणा का अर्थ आन्तरिक उत्तेजना है |

हम अपनी जिन्दगीमें दिन प्रतिदिन अनेको प्रकार के कार्य करते है |हम इन कार्यो को क्यों करते है ?शायद इसीलिए करते है क्योंकि इसके पीछे कोई- ना- कोई अभिप्रेरण अवश्य होता है |

अब प्रश्न यह उठता है की अभिप्रेरण किसे कहते है ? इसका स्वरुप क्या है?

सामान्य अर्थ में अभिप्रेरण का तात्पर्य वैसी अवस्था से होता है जो व्यक्ति को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है |

कुछ मनोवैज्ञानिको ने इसके अर्थ को समझने के लिए कुछ विचार प्रस्तुत किए है –

बेरोन ,वर्ण तथा कैंटोविज (1980) के अनुसार , " मनोविज्ञान में हमलोग अभिप्रेरण को एक काल्पनिक आन्तरिक प्रक्रिया के रूप में परिभाषित करते है व्यवहार करने के लिए शक्ति प्रदान करता है तथा एक खास उद्देश्य की ओर व्यव्हार को ले जाता है|"

margan,king visj and skoplar (1986)के अनुसार "अभिप्रेरण से तात्पर्य एक प्रेरक (driving) तथा कर्षण (pulling) बल से होता है जो खास लक्ष्य की ओर व्यव्हार को निरन्तर ले जाता है |"

रिली एवं लेविस के अनुसार "अभिप्रेरण एक ऐसा बल है जो व्यक्ति में भीतर से उत्पन्न होता है ना की कुछ ऐसी चीज़ जिसे शिक्षक छात्र में अपनी ओर से पैदा करते है |" (अर्थात अभिप्रेरण किसी बाहरी व्यक्ति के कहने से पैदा नहीं होता है)

स्किनर के अनुसार "अभिप्रेरण सिखने का सर्वोतम राजमार्ग है|" मैकदुगल के अनुसार "अभिप्रेरण वे शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक दशएँ है ,जो किसी कार्य को करने के लिए प्रेरित करती है|"

वितिंग एवं विलियम 3(1984) के अनुसार "अभिप्रेरण अवस्थाओ का एक एसा समुच्चय है जो व्यवहार को सक्रिय करता है निर्देशित करता है तथा किसी लक्ष्य की ओर उसे बनाये रखता है|"

उपर्युक्त परिभाषा से यह स्पष्ट होता है की अभिप्रेरण व्यक्ति की एक ऐसी आन्तरिक अवस्था को कहा जाता है जो उसमे कुछ क्रियाए उत्पन्न करके उसके व्यवहारों को एक खास दिशा में उद्देश्य की प्राप्ति की ओर आगे बढ़ता है |

इन मनोवैज्ञानिको की परिभाषा का विश्लेषण करने पर हमें अभिप्रेरण के स्वरुप का पता चलता है जिसका वर्णन निम्नांकित है -:

1.अभिप्रेरण व्यक्ति की एक आन्तरिक अवस्था को कहा जाता है |यह आन्तरिक अवस्था काल्पनिक होती है अत: इसे व्यक्ति के शरीर के भीतर ठोस रूप से देखा नहीं जा सकता है|

2. अभिप्रेरण में जो आन्तरिक अवस्था होती है उससे व्यक्ति में कुछ क्रियाएं उत्पन होती है |

3. अभिप्रेरण में उत्पन क्रियाएं एक निश्चित दिशा में यानि उद्देश्य की प्राप्ति की ओर बढ़ता है |

4.अभिप्रेरित व्यवहार उत्पन होने के बाद उद्देश्य की प्राप्ति तक वह जरी रहता है |

एक उदाहरण द्वारा अभिप्रेरण के स्वरुप को हम इस प्रकार समझ सकते है

आपको जोरो की भूख लगी है और आप किसी होटल में जाकर भोजन कर अपनी भूख को मिटाते है |

अब देखीये इस उदाहरण में हमें अभिप्रेरण के उपर्युक्त चार गुणों का समावेश मिलेगा |

पहला यहाँ भूख व्यक्ति की आन्तरिक अवस्था है जिसे बाहर से देखा नही जा सकता है इसे मनोवैज्ञानिको ने आवश्यकता (need) की संज्ञा दी है |

दूसरा यह आन्तरिक अवस्था व्यक्ति में कुछ विशेष क्रियाएं जैसे होटल खोजना ,होटल में जाकर भोजन के बारे में पूछताछ करना आदि उत्पन करता है |इस तनाव एवं क्रियाशीलता की अवस्था को प्रणोद कहा गया है |

तीसरा व्यक्ति द्वारा किये गये ये सभी क्रियाएं कुछ ऐसी होती है जो एक निश्चित दिशा में एक निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति की ओर ले जाता है जैसे इस उदाहरण में निश्चित लक्ष्य भोजन की प्राप्ति

है | इसे प्रोत्साहन कहा गया है |व्यक्ति में क्रियाशीलता की अवस्था तब तक पाई जाती है जबतक की उसे भोजन प्राप्त नही हो जाता |

इस तरह हम देखते है की अभिप्रेरण के स्वरुप (nature) की व्याख्या तिन मूल तत्वों द्वारा की गयी है| आवश्यकता (need),प्रणोद (drive) तथा प्रोत्साहन (incentive)।